पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 13-24

अरुणाचल की न्यिशी लोककथाओं के विविध पक्ष

✍ डॉ. जोराम आनिया ताना

देश के विभिन्न भागों की लोककथाओं का अध्ययन करने के बाद हमें ज्ञात होता है कि प्राय: सभी लोककथाओं में कई बातें समान रूप से पायी जाती हैं। देश के विभिन्न भागों में विद्यमान समान धार्मिक विश्वास, धारणाएँ, आस्थाएँ तथा जीवन की समान प्रक्रिया इसका कारण है। इसके पीछे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि का भी योगदान है। उदाहरण के लिए प्रकृति के प्रति लगाव, भाई-बहन का स्नेह, माता-पिता के घर से विदा होने वाली बेटी का दु:ख, दान-धर्म की महिमा, सत्य की महत्ता, पाप-पुण्य का अंतर आदि सभी समुदायों में समान रूप से अभियव्यक्त होता है। इसी तरह न्यिशी लोककथाओं में भी जीवन के उन सभी पक्षों का दर्शन होता है, जो किसी भी देश के जनमानस से जुड़े हुए होते हैं। लेकिन इनकी अपनी कुछ मौलिक विशेषताएँ भी हैं,जो कि क्षेत्रीय वातावरण, परिस्थिति और भौगोलिक परिवेश के कारण हैं। आर्थिक तंगी से बेहाल व्यक्ति, प्रकृति से जूझता हुआ अपने दैनिक जीवन में जिन-जिन परीक्षाओं से गुजरता है, उसके कारण जीवन-शैली में आये परिवर्तन उसे कैसे सीख देते हैं, राह दिखाते हैं, कैसे नये मूल्यों की स्थापना होती है, इसकी जड़ें केवल न्यिशी लोक जीवन में ही निहित हैं; जो लोककथाओं द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। इसमें माता-पिता, भाई-बहन, पशु-पक्षी, स्थानीय देवी-देवता, राक्षसों, वीर पुरुषों, व्यापार एवं अलौकिकता से संबंधित आदि कहानियाँ प्रमुख हैं। अरुणाचल प्रदेश में पाई जाने वाली न्यिशी जनजाति की लोककथाओं में सामान्य रूप से निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं।

1. श्रम से संबंधित लोककथाएँ:

पीढ़ियों से पहाड़ों-पर्वतों एवं दुर्गम जंगलों में निवास करने के कारण प्राकृतिक आपदाओं से लगातार जूझते रहने के कारण यह जनजाति स्वभावत: मेहनती और निडर होती है। यही कारण है कि इस समुदाय में श्रम से संबंधित लोककथाएँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। न्यिशी

लोककथाओं का मूल उद्देश्य मनोरंजन, शिक्षा-संस्कार आदि के साथ-साथ श्रम परिहार भी है। दादा-दादी, नाना-नानी अथवा गाँव के बुजुर्ग व्यक्ति कभी बच्चों को पास बिठाकर उन्हें जीवन संघर्ष, संस्कृति एवं मूल्यों से संबंधित कथाएँ सुनाते हैं,तो कभी देवी-देवता, पशु-पक्षी आदि की कथाएँ सुनाकर उन्हें नैतिक शिक्षा देते थे। इससे जहाँ नयी पीढ़ी को अपनी परम्पराओं और रिवाजों का ज्ञान होता था, वहीं उन्हें शिक्षा भी मिलती थी।

2. वीरता से संबंधित लोककथाएँ:

न्यिशी जनजाति स्वभावत: वीर एवं साहसी होती है। अत: परंपरागत रूप से न्यिशी जन-जीवन में पौरुष की कथाएँ घर-घर में प्रचलित हैं। इस तरह की कथाओं में साहस, शौर्य और परक्रम की झलक मिलती है। जिसमें चमत्कारिक और अलौकिक आदि का प्रभाव अधिक रहता है। उदाहरण के लिए 'लिन्खी सोज' लोककथा को लिया जा सकता है। यह लिन्खी सोज नामक एक कुशल शिकारी की कथा है। वह इतना बहादुर था कि शिकार की तलाश में जंगल में अकेले ही निकल जाता था। एक दिन जब वह जंगल में घूम रहा था,तो उसने एक जंगली सुअर को देखा। उसने एक मिनट गँवाये बिना अपना तीर निकाला और निशाना लगाकर सुअर पर चला दिया। तीर सुअर को लगा तो जरूर, पर उससे उसकी मृत्यु नहीं हुयी। घायल सुअर अपनी जान लिए भाग निकला। सुअर को मारने में नाकाम होने पर लिन्खी सोज ने उसका पीछा किया। पीछा करते-करते लिन्खी सोज को एक अजीब सी आवाज सुनाई दी और उसी के साथ आवाज की दिशा से एक तीर आया और सुअर के शरीर में आकर धंस गया। सुअर तुरंत मर गया और जब लिन्खी सोज मृत सुअर के नजदीक पहुँचा, तो उसने एक विशालकाय, लंबे आदमी को सुअर के पास हाथ में एक बड़ा धनुष और तीर के साथ पकड़े देखा। उसे देखकर लिन्खी सोज चुपचाप वापिस होने लगा। लम्बे बालों वाले उस आदमी के पास पुदुम नहीं था। लिन्खी सोज ने ऐसे अजीब से आदमी को पहली बार देखा था।

लिन्खी सोज ने उस विशालकाय आदमी से पूछा कि उसने उसके शिकार को क्यों मारा? उसने लिन्खी सोज को पास बुलाकर अपना परिचय दिया। उसने अपना नाम मीरी सोज बताया। इसके बाद उसने एक लंबी तलवार निकाली और मृत सुअर के शरीर के मध्य भाग को छुआ। मीरी सोज की जादुई तलवार से मृत पशु दो हिस्सों में बंट गया। मीरी सोज ने एक हिस्सा ले लिया और दूसरा लिन्खी सोज के लिए छोड़ दिया।

इसके बाद लिन्खी सोज ने मीरी सोज से पूछा कि उसने सुअर को कैसे मारा, तो मीरी ने उसे अपने जहर बुझे तीर के बारे में बताया। मीरी सोज ने जहर बुझा तीर निकाल लिया और मृत सुअर के शरीर के उस हिस्से को काट कर फेंक दिया, जहाँ तीर लगा था। इसके बाद दोनों अपने हिस्सों की भुनाई और खाने में लग गये। खाते-खाते थक जाने से लिन्खी सोज को तुरन्त नींद आ गयी, जबकि मीरी सोज अपनी जादुई तलवार की मदद से एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर सोया। लिन्खी सोज को ये सब कुछ सपने जैसा दिखाई दिया। रात में उसे एक सपना आया। उसने देखा कि मीरी सोज पर उसके द्वारा तीर क्यों नहीं चलाया गया था? यह केवल एक सपना था और कार्यरूप में परिणत नहीं हुआ था। किसी तरह रात बीती। सुबह मीरी सोज ने वही सपना सुनाया जैसा लिन्खी सोज ने रात में देखा था। लिन्खी सोज यह सोचकर दंग रह गया कि उसके देखे सपने का मीरी सोज को कैसे पता चल सकता है। मीरी सोज ने किसी तरह स्थिति को संभालते हुए कहा कि अब वे दोनों अच्छे दोस्त बन गये हैं। अब से लिन्खी सोज को कभी शिकार के लिए परेशान होने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मीरी सोज उसके लिए व्यवस्था कर दिया करेगा। हाँ, उसने लिन्खी को चेतावनी दी कि किसी को अपनी इस मुलाकात के बारे में न बताएँ, वरना इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।

जब बिछुड़ने का समय आया तो मीरी सोज ने कहा कि लिन्खी सोज को एक विशेष दिन इस स्थान पर एक सफेद मुर्गी, अंडे और कुछ धान के बीज लेकर आना होगा। इसके बाद दोनों दोस्त अपने-अपने स्थानों के लिए फिर से तयशुदा दिन पर मिलने के लिए अलग हो गये।

तयशुदा दिन लिन्खी सोज सभी चीजों के साथ तय जगह पर पहुंचा, मीरी सोज पहले से ही उसका इंतजार कर रहा था। लिन्खी सोज के पहुँचने पर मीरी सोज उसे एक गुफा में ले गये। वह गुफा वास्तव में मीरी सोज का आवास-स्थान था। गुफा में प्रवेश करने पर लिन्खी सोज को आश्चर्य हुआ कि वह कोई साधारण गुफा नहीं थी। उसमें सब-कुछ अच्छी तरह से व्यवस्थित किया गया था। यहाँ तक कि लिन्खी सोज के लिए खाना बनाकर इंतजार किया जा रहा था।

यह गुफा वास्तव में, आत्माओं का निवास स्थान था। न्यिशीयों द्वारा उसे 'आत्मा-उई' कहा जाता था। यहाँ मनुष्यों को आने की इजाजत नहीं थी। यहाँ दो प्रकार की आत्माओं का निवास था-उदार आत्माएँ और द्रोही-आत्माएँ। द्रोही आत्माएँ हमेशा मनुष्य के खिलाफ होती हैं। वे इंसान को किसी भी तरह का नुकसान पहुँचाने या मार देने की फिराक में रहती हैं। मीरी सोज

वास्तव में एक उदार आत्मा थी, जो जंगल में शिकारियों की मदद करता था। न्यिशीयों के अनुसार ऐसी आत्माएँ आदमी की तरह जीवन व्यतीत करती हैं।

यह सोचकर कि कहीं किसी द्रोही आत्मा को अपने आवास के स्थान पर किसी इंसान की उपस्थिति का पता न चल जाएँ, इसलिए मीरी सोज ने लिन्खी सोज को गुफा के अंदर एक सुरक्षित जगह पर ले जाकर छिपा दिया। शाम को जब द्रोही-आत्माएँ गुफ़ा में आईं तो उन्होंने इंसान की गंध महसूस की। उन्होंने मीरी सोज से इसके बारे में पूछताछ की। इस पर मीरी सोज ने बहाना बनाया कि यह गंध उसके द्वारा लायी गयी सफेद मुर्गी और उसके अंडों से आ रही है। उसने दोनों चीजें दिखा भी दीं। द्रोही आत्माएँ उन पर इतनी मुग्ध हो गयीं कि तुरन्त उन्हें पाने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगीं। वे गंध के बारे में भूल गईं। मीरी सोज ने उन्हें मुर्गी और अंडे दे दिये, जिन्हें पाकर वे संतुष्ट हो गयीं। कुछ देर बाद वे गुफा से निकलकर व्यापार और वाणिज्य के लिए ऊँची पहाड़ियों के पास चली गयीं। न्यिशीयों के अनुसार आज तक भी ये ऊँची पहाड़ियाँ तिब्बती सीमा को ओर अंतरराष्ट्रीय सीमा के क्षेत्र में हैं।

इस प्रकार सब आत्माओं के जाने के बाद मीरी सोज लिन्खी सोज को बाहर लाया और उसे एक जादुई धनुष और तीर दिये। साथ ही शिकार के दौरान उसके प्रयोग का तरीका भी समझा दिया। मीरी सोज ने आश्वासन दिया कि इस धनुष से कोई भी तीर सधे निशाने तक ही पहुँचेगा।

लिन्खी सोज खुशी-खुशी अपने गाँव लौट आया और जंगली जानवरों के शिकार करके सुखी जीवन व्यतीत करने लगा। वह अपने शिकार में इतना कुशल हो गया कि स्वाभाविक रूप से गाँव के लोगों का ध्यान उसकी ओर खींचा। उन्हें लगता था कि लिन्खी सोज को शिकार की यह कला अपनी बहुत दिनों की मेहनत और कड़े अभ्यास के कारण प्राप्त हुई थी। लेकिन लिन्खी सोज अपने रहस्य को गहराई से छिपाये हुए था क्योंकि उसे मीरी सोज द्वारा किसी को नहीं बताने के लिए चेताया गया था।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और लिन्खी सोज बूढ़ा हो चला। वह अब पहले की तरह शिकार के लिए नहीं जा सकता था। उसका अधिकांश समय दोस्तों के साथ गपशप और अपने पोते-पोतियों को कहानियाँ सुनाने में बीतता था। इस दौरान यदि कोई भी मामला किसी के शिकार और उसमें अपने हुनर का सवाल लेकर आता था, तो लिन्खी सोज ऐसी चर्चा को रफा-दफा कर देता था। लेकिन एक दिन उसने इस रहस्य का उजागर अपने पोते-पोतियों के सामने कर दिया। उनके ऐसा करते ही धनुष अचानक उसके हाथ से ओझल हो गया और लिन्खी सोज तुरन्त मर गया।

3. गीत से संबन्धित लोककथाएँ:

न्यिशी समुदाय में ऐसे बहुत से गीत प्रचलित हैं, जिनका संबंध किसी न किसी गीतकथा से है। इस वर्ग के अंतर्गत धार्मिक कथाएँ, ऐतिहासिक कथाएँ, सामाजिक कथाएँ आदि मुख्य रूप से आती हैं। प्राय: झूम खेत की कटाई के बाद या जाड़ों की रात में लोग एक जगह इकट्ठे होकर गीतकथा सुनाने लगते हैं, जिन्हें लोक-कथाकार विशेष रूप से गाकर ही सुनाते हैं। इन गीत कथाओं में मानव जीवन के लिए कुछ न कुछ संदेश, सीख आदि छुपा रहता है और इसका संबंध मानव जीवन के सुख-दु:ख, करुणा, साहस, मित्रता, शत्रुता, धर्म, मान्यताएँ, आशा-आकांक्षा से होता है। दादियाँ पोते-पोतियों को गीत कथा सुनाकर उनका मनोरंजन करती हैं, तो माताएँ बच्चे की पीठ पर थपकी देती हुई उसे गीत-कथा की पंक्तियाँ सुनाती हुई सुलाती हैं। इन कथाओं में जो संदेश छिपा हुआ रहता है, उससे सामाजिक बुराइयों से बचने का उपदेश मिलता है। इसके अलावा ये कथाएँ मानसिक संतुष्टि भी देती हैं।

4. अलौकिक कथा से संबन्धित लोककथाएँ:

न्यिशी लोकसाहित्य अलौकिक कथाओं का भंडार है। इसके अन्तर्गत आदि जरपो तची, आच पोवर, जरी, दिमीनरिन आदि कथाएँ आती हैं। यहाँ के लोक विश्वास के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है या आत्महत्या कर लेता है अथवा धोखे से उसकी हत्या कर दी जाती है, तो वह बुरी आत्मा बन जाती है। उसकी आत्मा भटकती रहती है और वह विभिन्न प्रकार के काल्पनिक रूप में लोगों के भय का कारण बना रहता है। इस तरह की कथाओं में आत्माएँ अचानक अज्ञात लोक से आकर किसी अज्ञात व्यक्ति को सहारा दे जाती हैं। इन लोककथाओं में आरम्भिक जीवन को अत्यंत कष्टदायक दिखाया जाता है, लेकिन अलौकिक शक्ति के कारण जीवन में परिवर्तन आता है और अंतत: सबका जीवन खुशियों से भर जाता है। उदाहरण के लिए 'डोजी यासिंग' कथा प्रस्तुत है।

यह एक भाई और बहन की कथा है। वे बहुत गरीब थे । वे किसी तरह अपनी थोड़ी सी खेती से गुजारा करते थे। बहन बहुत सुंदर थी, उसका भाई भी सुन्दर दिखता था। वे अपनी गरीबी के कारण शादी नहीं कर सकते थे। बहन हमेशा की तरह अपने भाई की शादी के बारे में सोच रही थी। क्योंकि यह इस कार्य के लिए बिल्कुल सही समय था,जबकि भाई इधर अपनी बहन की शादी को लेकर चिंता में था।

खेत में अकेले काम करते हुए एक दिन शादी की उम्र की एक खूबसूरत लड़की भाई के सामने दिखायी दी और उससे शादी करने का प्रस्ताव दिया। उसने अपनी योजना भी बतायी

कि वह कैसे कम उपज को अत्यधिक उपज में बदल सकती है। उसने कहा कि शादी के बाद उसके पति को काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी ; क्योंकि वह जादुई शक्तियाँ रखती है। लेकिन इसके लिए उसने एक शर्त रखी कि उसे अपनी बहन की हत्या करनी होगी, क्योंकि वह और उसकी ननद एक-साथ नहीं रह सकतीं। भाई की ओर से कोई कठोर निर्णय ले लिया जाना था, या तो वह शादी के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता या फिर अपनी बहन की हत्या करता। आखिर उसने लड़की का प्रस्ताव ठुकरा दिया। लेकिन वह सुंदर लड़की अपने प्रयास में लगी रही और एक दिन भाई ने उसकी बात मान ली। पर वह अपनी बहन की हत्या करने का साहस नहीं जुटा पा रहा था।

एक दिन भाई ने अपने रयोर (लंबा और तेज चाकू) की धार पैनी की और अपनी बहन को बहाने से घर के ऊपर से नीचे झाँकने को कहा। जब बहन ने ऐसा किया तो भाई ने उसका सिर काट दिया। हत्या के बाद वह उसका न्यिबुंग बनाया गया। कुछ देर बाद जब वह लौटा तो उसने पाया कि उसकी बहन का शव गायब था। वह घबरा गया और शव की खोज में इधर-उधर भटकने लगा। तभी उसने देखा कि उसकी बहन का शव एक बरगद के पेड़ पर लटका हुआ था और उसे डोजिंग याशिंग (राक्षसी) खा रही था। तब उसे अहसास हुआ कि डोजिंग यासिंग और कोई नहीं, आत्मा है। जब उसने पूछा कि वह उसकी बहन को क्यों खा रही है, तो उसने कहा कि मैं तो तुमको भी खाने वाली हूँ। इसके बाद भाई को एहसास हुआ कि उसे शादी की चाहत एक खूबसूरत लड़की की आड़ में डोजिंग याशिंग द्वारा मूर्ख बनाया गया है। इस घटना के बाद भाई को बेहद अफसोस और पीड़ा हुई। उसे कहीं भी शांति नहीं मिलती। वह जहाँ भी जाता, उसकी बहन की आत्मा एक चिड़िया के रूप में उसका पीछा करती और यह कहती हुई चिढ़ाती- 'भाई, आपके लिए डोजिंग द्वारा एक पूरी डेगची भरकर चावल पकाया गया है। क्या उसने आपके लिए अपने यहाँ उपजी थोड़ी सी मकई की भी शराब बना डाली है?' न्यिशीयों का विश्वास है कि आज भी चिड़िया उसे चिढ़ाती रहती है।

5. पशु-पक्षी से संबंधित लोककथाएँ:

प्राय: सभी जनजातियों की लोककथाओं में पशु और पक्षी दोनों महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। न्यिशी जनजाति भी इसका अपवाद नहीं है। प्राकृतिक परिवेश के कारण इस जनजाति में पशु-पक्षी से संबंधित अनेक लोककथाएँ हैं। ये कथाएँ थोड़ी-सी प्राय: उपदेशात्मक होती हैं, साथ ही इनके जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य-समाज की भाँति ही पशु-पक्षियों का भी अपना समाज होता है, लेकिन उनका इंसानों के साथ लगातार संपर्क बना रहता है। दोनों समाज एक-दूसरे के मदद के

लिए तत्पर रहते हैं। अलग-अलग समाज होकर भी दोनों मूल्यों के धरातल पर एक नजर आते हैं। इसके ज्वलंत उदाहरण ताईविडा', निमानिया आदि कथाएँ हैं।

'ताई बिडा' गाँव के एक अमीर आदमी की कथा है। वह मिथुन के बड़े झुंड का मालिक था। उस झुंड में एक मादा मिथुन भी थी।,जो सभी मिथुनों की माँ थी, जो ताई बिडा को एक घने जंगल में मिली थी। जिससे पैदा हुए मिथुनों के कारण ताई बिडा की किस्मत चमक गई थी।

एक बार ताई बिडा को एक अशुभ-सा सपना आया। सपने में उसने देखा एक बूढ़ी औरत जोर-जोर से रो रही थी और कह रही थी कि उसकी वजह से ताई बिडा अमीर आदमी बना पर अब वह उसे मारने जा रहा है। जैसे ही उसे यह सपना आया उसके मिथुनों ने चीखना शुरू कर दिया। वे भोर में जाकर चुप हुए। मिथुनों की चीख से सुबह-सुबह ताई बिडा की नींद खुल गयी, जबकि परिवार के बाकी सदस्य अभी भी सो रहे थे। ताई बिडा जल्दी से उठकर अपने मिथुनों के बाड़े में गया। पर वहाँ उसने पाया कि बाड़े से सारे के सारे मिथुन गायब थे। उनकी रस्सियाँ भी ऐसे खुली हुई थीं, मानो किसी ने जानबूझकर किया हो।

ताई बिडा ने तुरन्त अपने परिवार के अन्य सदस्यों को जगाया और सब के सब मिथुनों की तलाश में निकल गये। रास्ते पर उन्हें माँ मिथुन के पैरों के निशान मिले। माँ मिथुन के साथ अन्य मिथुनों के पैरों के निशान भी साथ-साथ चल रहे थे। ज्यों-ज्यों वे पैरों की दिशा में आगे चलते, पैरों के निशानों की संख्या बढ़ती गयी। यानी मिथुनों की संख्या बढ़ती गई होगी। ताई बिडा और उसके परिवार ने देखा कि मिथुनों के पैर नदी, घाटी और पहाड़ों को पार करते बढ़ रहे थे। उन्हें लगा कि शायद आगे पार करने के बाद मिथुनों का जुलूस नजर आ जाए। इसलिए वे आगे बढ़ते गये। उन्होंने पाया कि गेकर सिन्यी नामक झील के पास मिथुन रुके थे। ताई बिडा ने देखा कि सारे मिथुन एक-एक करके झील के गहरे पानी में कूद रहे हैं। ताई बिडा ने उन्हें रोकने की कोशिश की, पर सब व्यर्थ रहा।

असल में मां मिथुन, जो कि ताई बिडा की किस्मत बनकर आयी थी, वह कोई साधारण मिथुन नहीं थी, बल्कि वह एक देवी थी-जल की देवी। जैसे ही माँ मिथुन को पता चला कि ताई बिडा या तो उसके मिथुनों की बलि चढ़ा देता है, या उन्हें दुल्हन के मूल्य के रूप में देकर नयी पत्नी ले आता है, या फिर गुलामों या अन्य किसी कीमती सामान के लिए वह मिथुनों का प्रयोग करता है, वह बहुत गुस्से में आ गयी। उसने अपने सारे मिथुनों को जुलूस में इकट्ठा कर लिया, यहाँ

तक कि बलि चढ़ाये गये और बेचे गये मिथुन भी लौट आये और सब के सब जल की देवी माँ मिथुन के निवास स्थान पर जाकर सिन्यी झील में आकर समा गये।

उसी दिन से ताई बिडा,उसकी पत्नियाँ और बच्चे बुरी तरह बीमार रहने लगे। वे बीमारी से उबर नहीं सके और उनकी मौत हो गयी। इस तरह ताई बिडा के सभी बच्चे, सारी पत्नियाँ और गुलाम एक-एक कर मर गये और अन्त में वह खुद भी मर गया।

6. देवी-देवता से संबंधित लोककथाएँ:

न्यिशी जनजाति मूलत: प्रकृति पूजक है। इस समुदाय में विशेष रूप से दोनी-पोलो (स्थानीय देवी-देवता) एवं दुष्ट आत्माओं की पूजा की जाती है। इसके अलावा यदि किसी की अचानक तबीयत खराब हो जाने या नजर लगने से अथवा सफलता की कामना से विभिन्न देवी-देवताओं को याद किया जाता है। इसी तरह त्योहारों-उत्सवों पर आधारित कई लोककथाएँ भी यहाँ कही जाती हैं, जिनमें चितुमबुत, जितअन, आबोतानी, गोदाउई, न्योकुमआन, चितुङ, बोतह आदि कथाएँ प्रसिद्ध हैं, जिसमें सूरज-चाँद से मदद लेना, पहाड़ों-पर्वतों से प्रार्थना करना, वर्षा-बादल आदि से संबंध जोड़ने के प्रसंग पाये जाते हैं। यह प्रकृति के साथ उनके समाज से पारस्परिक संबंध का प्रमाण है। न्यिशी लोकजीवन में इन कथाओं का विशेष महत्व है। कह सकते हैं कि न्यिशी लोककथाओं में किसी न किसी रूप में मान्यताओं, विश्वासों को स्थान मिला है, जिससे स्थानीय देवी-देवता, इनके प्रति श्रद्धा, आस्था, पूजा आदि कथाओं के विषय वस्तु बनते हैं।

7. प्रेम से संबन्धित लोककथाएँ:

न्यिशी समुदाय की सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से तथा धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश के कारण प्रेम कथाएँ बहुत अधिक संख्या में नहीं है। परन्तु जो भी प्रेम कथाएँ विद्यमान हैं, उनमें प्रेम पवित्रता एवं उच्च चारित्रिक मान्यताओं के मध्य जन्म लेता है। जिसमें भौतिक स्वरूप कम और आत्मिक स्वरूप ज्यादा दिखायी देता है। पशु-पक्षी तथा अज्ञात शक्तियाँ भी प्रेमकथाओं के पात्र के रूप में सामने आते हैं। इस तरह की कथाओं को सरस, रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए कथाकार उनमें कल्पना का पुट भी डाल देता है, उदाहरण के लिए जरपू तची, यालोरन आदि कथाएँ इनमें शामिल हैं।

8. व्यापार से संबंधित लोककथाएँ:

अरुणाचल प्रदेश में न्यिशी जनजाति वीरता, साहस, पराक्रमी आदि के लिए चर्चित है। इनका समुदाय अत्यंत संघर्षशील रहा है। ऊँची पहाड़ियों एवं दुर्गम जंगलों में निवास करने के साथ-साथ, कठिन जीवन स्थितियों, वातावरण

और प्रकृति के घात-प्रतिघात की छवि न्यिशी जनजाति की लोककथाओं में दिखायी पड़ती है। 'इमिनदीमिन', 'किमिनरिंक', 'बरम दीमिन' आदि अनेक लोककथाएँ इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

न्यिशी जनजाति के जीवन संघर्ष से संबंधित एक लोककथाओं में 'बरम दीमिन' का उल्लेख किया जा सकता। यह बरम दीमिन नाम की एक लड़की की कथा है, जो अपने दो भाईयों और विधवा माँ के साथ रहती थी। परिवार की इकलौती बेटी होने के नाते उसे अपने भाईयों और माँ से खूब लाड़-प्यार मिलता था। इस लाड़-प्यार से उसमें एक जिद्दीपन विकसित होता गया और बड़ी होकर वह बेहद अकड़ू स्वभाव की बन जाती है।

एक दिन उसके भाई व्यापार और वाणिज्य के लिए नियामनेपा (ऊँची पहाड़ियों से परे उत्तर में एक जगह) जाने की तैयारी कर रहे थे, तो बरम दीमिन ने भी उनके साथ जाने की इच्छा जतायी। इलाके की प्रकृति, खड़ी पहाड़ियों और रास्ते पर खतरे की संभावना को देखते हुए भाइयों ने उसे साथ ले जाने से बचने की कोशिश की। पर वह अपनी जिद पर अड़ गयी। आखिर भाइयों को उसे कुछ शर्तों के साथ ले जाने के लिए सहमत होना पड़ा। शर्तें ये थीं कि उसे रास्ते के दौरान दिखने वाली किसी भी चीज को लेकर कुछ नहीं बोलना है, न किसी आवाज की नकल करनी है, न ही कोई गीत आदि गाना है, किसी अदभुत दृश्य पर आश्चर्य व्यक्त नहीं करना है और किसी भी हालत में किसी डरावने जानवर आदि को देखकर डर नहीं दिखाना है। वह इन शर्तों को मानने के लिए राजी हो गयी।

वे घर पर अपनी बूढ़ी माँ को छोड़कर नियामनेपा के लिए निकल पड़े। लेकिन रास्ते में बरम दीमिन सारी शर्तें भूल गयी और उनके विपरीत काम करने लगी। वे हमेशा की तरह नियामनेपा पहुँच गये और अपने काम को पूरा करने के बाद वापस घर की ओर लौटने लगे। चूँकि यह एक महीने से भी अधिक का लंबा दुरूह सफर था, इसलिए उनको जगह-जगह पर रुकना पड़ा था। एक बार ऐसे ही ये लोग एक बरगद के पेड़ के नीचे ठहरे हुए थे। रात को डेढ़ बजे के आसपास बरगद के पेड़ की एक जड़ निकली और बरम दीमिन को इस तरह जकड़ लिया कि उसका हिलना-डुलना मुश्किल हो गया।

उसके दो भाइयों ने चाकू की मदद से उस जड़ को काटकर बहन को बचाने की कोशिश की, लेकिन वे जितना उसे काटते, जड़ें आश्चर्यजनक रूप से फिर बढ़ जातीं, वे फिर काटते, फिर जड़ें निकल आतीं और बहन को पैरों की ओर से जकड़ लेतीं। दोनों भाई काटते-काटते थक गए। एक बार उन्हें लगा कि उन्होंने पूरी जड़ काट डाली है, पर फिर

नई जड़ें निकल आयीं। आखिर उसने के पूरे शरीर को अपने आगोश में ले लिया। दोनों भाई निराश होने लगे थे।

समझ गयी कि उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा था। उसे एहसास था कि यह भाइयों द्वारा उसे दी गयी सलाह के अनुपालन नहीं करने के कारण था जो उन्होंने नियाम नेपा के लिए चलते समय तय किया था। उसे लगा कि अब बचने का कोई रास्ता नहीं है। इसीलिए उसने अपने भाइयों से कहा कि वे उसके लिए दुखी न हों और उसे छोड़कर आगे का रास्ता तय करें। लेकिन भाई उसे यूँ जंगल में अकेला नहीं छोड़ना चाहते थे। जंगली जानवर आकर उसे खा सकते थे। उसने भाईयों से कहा कि वे उसके पास एक धनुष और तीर रख जाएँ ताकि जरूरत पड़ने पर वह जंगली जानवरों को डरा सके। वे उसके पास जरूरत की सारी चीजें छोड़ गये, जैसे ईगिन (निशि औरतों द्वारा पीठ पर ढोई जाने वाली टोकरी), बेम्या (निशि औरतों द्वारा पहाड़ियों पर चढ़ाई करते समय प्रयोग की जाने वाली बाँस की छड़ी), ओपू (फूल) आदि। जाते समय उसके भाई बहुत दुखी थे। ने उन्हें कहा था-

हे मेरे भाईयो, तुम मेरी सुरक्षा की चीजें छोड़े बिना मत जाओ। कृपया मेरे साथ ईगिन, बेम्या, चुचा और ओपू छोड़कर जाना। कृपया घर पहुँचते ही माँ को मत बताना कि मैं किस हालत में हूँ। उसे मेरे लिए दुखी मत होने देना, न ही आँसू बहाने देना; बल्कि इस हालत का निर्भीकता से सामना करने के लिए प्रोत्साहित करना। यह सब मेरी ही गलती के कारण हुआ। किसी का कोई दोष नहीं है। भाइयों को बहन को इसी हालत में छोड़कर जाना पड़ा। वे जैसे ही घर पहुँचे, माँ ने बेटी को साथ में न देखकर उसके बारे में पूछा। बातों-बातों में भाइयों ने बहन की सारी बात माँ को बता दी। माँ से यह दु:ख बर्दाश्त नहीं हुई और उसने वहीं दम तोड़ दिया।

9. उपदेशमूलक लोककथाएँ:

न्यिशी जनजीवन में लोककथाओं का महत्त्व चिर काल से रहा है। इन लोककथाओं में उनके युग-युगान्तर का अनुभव बोलता है। ये कथाएँ उनके समाज, संस्कृति, धार्मिक-नैतिक मान्यताओं की आधारशिला है,जिसका उद्देश्य मनोरंजन आदि के साथ-साथ शिक्षा एवं उपदेश देना भी है। 'लूरम बर्ज' एक उपदेशात्मक न्यिशी लोककथा है। इसमें एक सुन्दर युवती अपने माता-पिता के साथ रहती थी। उसका नाम बर्ज था। वह जितनी सुंदरी थी, उतनी ही अपने कामों में दक्ष। एक बार खेतों से लौटते समय वह मछलियों से भरी एक टोकरी अपने साथ लायी। उसी दिन किसी ने उसे गंभीरता से नहीं लिया। लेकिन जब वह इसे नियमित अभ्यास की तरह करने लगी, तो उसके माता पिता को चिंता होने

लगी। न्यिशी समाज में एक समय में मछली की इतनी भारी मात्रा में पकड़ने को पकड़ने वाले व्यक्ति अथवा उसके परिवार के लोगों के लिए अशुभ संकेत माना जाता है।

उसके माता पिता ने उसे सलाह दी और उसे नियमित रूप से मछली नहीं पकड़ने को कहा। लेकिन बर्ज ने उनकी इस सलाह पर ध्यान नहीं दिया और वह पहले की तरह टोकरी भर-भरकर मछलियाँ लाना जारी रखा। माता-पिता ने उसे दूसरे कामों में उलझाने का प्रयास किया। बर्ज की मां ने उसे मोतियों से भरी एक टोकरी दी और माला बनाने को कहा, जिसे बर्ज ने बहुत जल्दी बना लिया और मछली पकड़ने के लिए समय भी निकाल लिया। इसी तरह उसकी माँ ने बर्ज को तरह-तरह के मुश्किल काम दिये, जिन्हें उसने मिनटों में निपटा डाला, यानी कोई भी काम उसे मछलियाँ पकड़ने जाने से नहीं रोक पाया।

एक दिन जब वह परिवार के एक बच्चे के साथ मछलियाँ पकड़कर लौटने वाली थी, तभी तालाब के किनारे पड़ा रहने वाला विशाल लूरम (पत्थर) अचानक लुढ़का और उसके बर्ज का रास्ता रोक लिया। जब वह देर तक घर नहीं लौटी तो उसके माता पिता को चिंता हुई, वे उसे खोजते हुए तालाब पर आये और देखा कि एक पत्थर ने बर्ज का रास्ता रोका हुआ है। वे उसे और बच्चे को बचाने की कोशिश करने लगे, लेकिन बात नहीं बनी। तमाम प्रयासों के बावजूद वे पत्थर को नहीं तोड़ पाये। वह तीन-चार महीने तक उस विशाल पत्थर की कैद में रही, इस दौरान उसने अपने माता-पिता से स्वयं द्वारा पैदा किये जाने वाली मुकु(ककड़ी), ताप(मीठी लौकी), उपम (लौकी) आदि सब्जियों के बारे में जानकारी हासिल की। अंततः वह इस रहस्यमय पत्थर की कैद में भुखमरी से मर जाती है।

'लूरम बर्ज' लोककथा हमें यह सीख देती है कि हमेशा माता-पिता और बड़ों की माननी चाहिए नहीं तो भविष्य में मुसीबतें आती रहेगी।

अत: कहा जा सकता है कि न्यिशी समाज के समस्त सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन इन लोककथाओं में वर्णित है। पूर्व में सामाजिकों को पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उत्तरदायित्वों और मर्यादाओं का बोध इन्हीं कथाओं के माध्यम से कराया जाता था। वे बचपन में इन्हीं लोककथाओं को सुनकर सोया करते थे, यौवन काल में इन्हीं के माध्यम से प्रेमोन्माद में प्रमत्त रहते थे तो जीवन के अंतिम पढ़ाव में जीवन-यात्रा से श्रान्त हो इन्हीं कथाओं से मन बहलाया करते थे। इस तरह इन कथाओं में न्यिशी संस्कृति का सांगोपांग चित्रण एवं व्यापक भावों का उल्लेख मिलता है।

शब्दार्थ :

1 पुदुम- न्यिशी पुरुष प्राय: लंबे बाल रखते हैं और उन्हें जूड़े की तरह माथे के ऊपर बांध लेते हैं। ये बंधे बाल पुदुम कहलाते हैं।

2 न्यिबुंग-कब्र,निशियों द्वारा शव को दफ़नाने के लिए कब्र की जगह के ऊपर बांस से एक संरचना का निर्माण करना।

ग्रंथ-सूची :

अंग्रेजी :

Hina, Nabam NAkha.The Nyishi Words and Proverbs. Delhi:Aurthors Press, 2013

Showren, Tana.The Nyishi of Arunachal Pradesh: Ethnohistorcal Study.Ergodebooks,2008

Taku, Pumu,Dojang Napong and Pudom Taku. The Policy Times

हिन्दी :

उपाध्याय,कृष्णदेव. लोकसाहित्य की भूमिका. इलाहाबाद : साहित्य भवन, प्रा. लि., 1993

चौबे, कृपाशंकर, संपा.हिन्दी और पूर्वोत्तर. दिल्ली : वाणी प्रकाशन,2018

संपर्क सूत्र :

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डेरा नातुंग शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर

ई-मेल: drjoramaniya@gmail.com